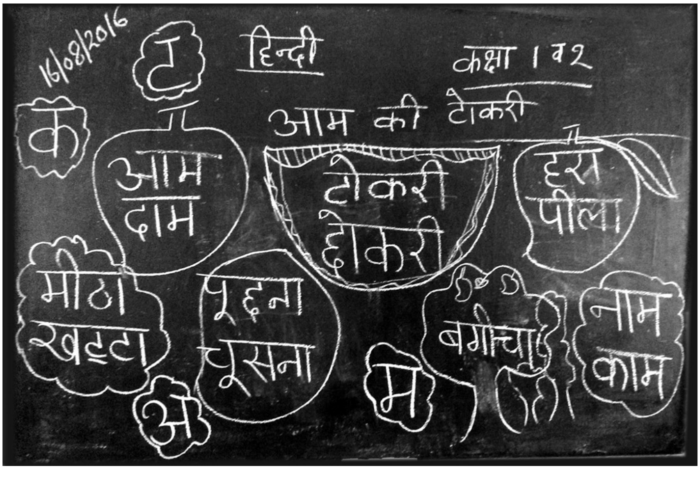
पढ़ने–लिखने का आनन्द

हंसराज तंवर

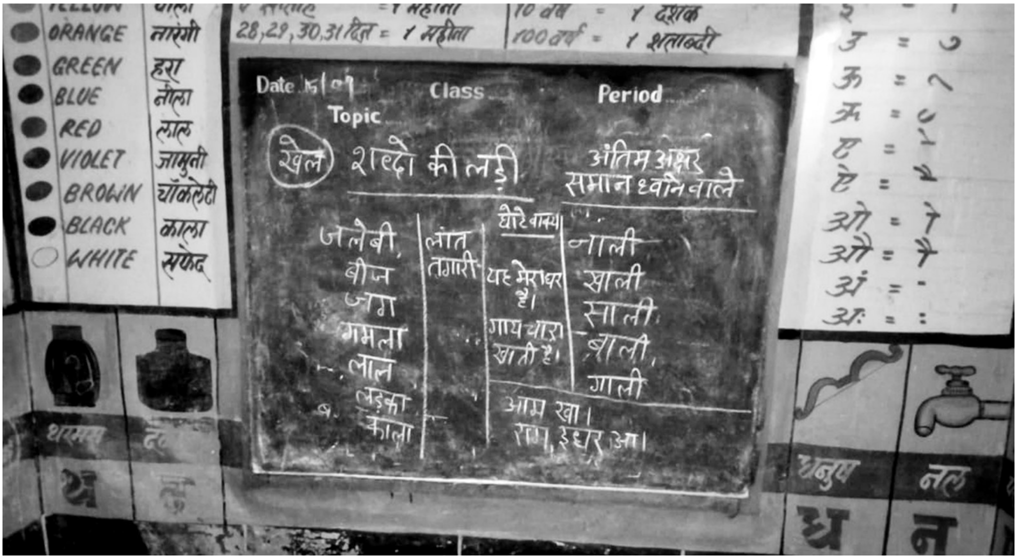
कक्षा 1 में बच्चों को लिखना सिखाने के अनुभव इस लेख में प्रस्तुत हैं। लेखक बताते हैं कि बच्चों को लिखना सिखाने की शुरुआत उन्होंने वर्णों से की। कुछ दिन इनपर काम करने के बाद भी जब बच्चे समझ नहीं पाए तब उन्होंने अपने काम के तरीक़े को बदला। उन्होंने बच्चों को ख़ूब चित्र बनाने, और चित्रों के बारे में बात करने के मौक़े दिए। उन चित्रों के नामों को लिखना बच्चों ने सीखा और ऐसे धीरे-धीरे वे न केवल वर्ण, बल्कि शब्द व छोटे वाक्य भी लिखने और पहचानने लगे। –सं.

मैं प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाला शिक्षक हूँ। मेरे पास कक्षा 1 में, 5–6 वर्ष की आयु के 19 बच्चे हैं। इनमें 7 बालिकाएँ और 12 बालक हैं। मैं उनको हिन्दी भाषा पढ़ाता हूँ। बच्चों में मौखिक भाषा विकास हेतु मैं उनको रोज़ बालगीत, कहानी, कविता, आदि उनकी घर की भाषा में सुनाता हूँ और उनसे सुनने का प्रयास भी करता हूँ। शुरुआत में कुछ बच्चे ही कुछ सुना पाए, पर जब मैंने बालगीत, कविता, कहानी का क्रम कक्षा में लगातार बनाए रखा तो 2 माह बाद सभी बच्चे बालगीत सुनाने लगे। भले ही वे पूरा गीत नहीं सुना पाते, पर तीन-चार पंक्तियाँ बोलने लगे। मुकेश, सीमा, लाली, रामजीलाल व रमेश ने अच्छी तरह से हाव-भाव के साथ बालगीत सुनाना और बातचीत करना शुरू कर दिया। मुझे बच्चों को हिन्दी भाषा में मौखिक अभिव्यक्ति के साथ-साथ लिखित अभिव्यक्ति हेतु वर्णों की पहचान व लिखने का अभ्यास भी करवाना था।



इसकी शुरुआत मैंने वर्णों को लिखवाने से की। इस शुरुआती शिक्षण में वर्णों की पहचान व उनकी आकृतियाँ बनवाने में मुझे कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा था।

मैंने यह पाया कि बच्चे लिखने में ख़ूब रुचि लेते थे, पर वर्णों को उलटा लिखना, आकृति को बहुत बड़ा बनाना, सही मोड़ नहीं करना, जैसी चुनौतियाँ मेरे सामने आ रही थीं। साथ ही बच्चों को वर्ण पहचान करवाना भी मेरे लिए चुनौती बन रही थी। हालाँकि मेरा ऐसा मानना था कि



इन वर्णों की आकृति बच्चे धीरे-धीरे (आगे की कक्षाओं में) सही कर ही लेंगे, पर वर्ण पहचान करवाना पढ़ने के लिए आवश्यक है। बच्चे कुछ अक्षरों का उच्चारण भी सही नहीं कर पा रहे थे। मसलन, 'द' और 'ध' में अन्तर न करना, 'स' को 'ह' बोलना, आदि। अक्षरों का क्रम बदलने पर बच्चे एकदम से नए शब्द को पहचानने में दिक़्क़त महसूस करते थे। इन चुनौतियों से मैं कक्षा शिक्षण के दौरान लगातार जूझ ही रहा था कि एक दिन मैंने सभी बच्चों को अपने मन से चित्र बनाने के लिए कहा। सभी बच्चों ने अलग-अलग चित्र बनाए। उन्होंने पेड़, चूहा, पतंग, तिरंगा झण्डा, झूला, बाल्टी, केला, बैगन, गिलास, फूल व आम के चित्र बनाए।

मैंने बच्चों से उन चित्रों पर बात करना शुरू किया। बच्चे बातचीत में रुचि ले रहे थे। मैंने उनसे बनाई गई चीज़ों के रंग, वे क्या काम आती हैं, उनकी ख़ासियत, आदि को लेकर बातें कीं।

कुछ बच्चों के चित्र स्पष्ट नहीं बने थे। लेकिन उन चित्रों पर भी हमने चर्चा की। मसलन, यह आपने क्या बनाया है? यह क्या काम आता है? आपने इसको कहाँ देखा है, आदि। मैंने जाना कि उनके द्वारा बनाई गई आड़ी-तिरछी दिखने वाली रेखाएँ, छोटे-बड़े-चपटे गोले, मुझे नहीं समझ आए, मैं उनके कोई मायने नहीं गढ़ पाया था, लेकिन बच्चे जानते थे कि उन्होंने क्या बनाया है। यही नहीं, वे सभी अपने बनाए चित्रों की व्याख्या भी कर पा रहे थे। बच्चों के लिए इन चित्रों में लोहे का चक्र, गाय की पूँछ, भैंस का सींग, दादी का चश्मा जैसी कई चीज़ें थीं। अपनी कुछ कक्षाओं में मैंने उनको अपनी इच्छा से और नए-नए चित्र बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। चित्रों को बनाने से उनकी हाथ और आँख की माँसपेशियों की कसरत होती ही थी, साथ ही हमें चर्चा के लिए भी कई विषय मिल जाते थे।

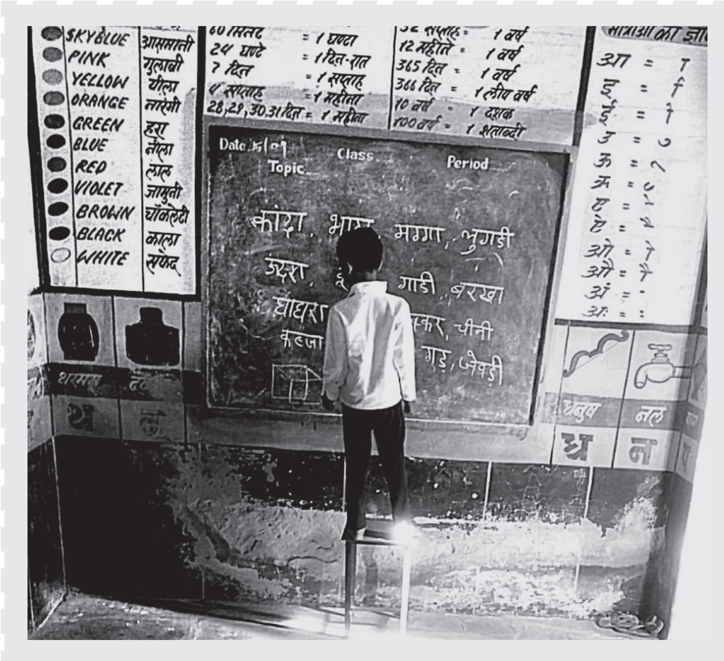
चित्रों पर चर्चा के दौरान कई सवाल-जवाब भी होते। जैसे– एक बार मैंने पूछा, "बताओ, केले का रंग कौन-सा होता है?" लगभग सभी बच्चों ने केले का रंग पीला बताया, पर एक बच्ची सीमा ने सफ़ेद बताया। मैंने उससे इसका कारण जानना चाहा तो वह बोली, "सर, पीला तो छिलका होता है, अन्दर से केला सफ़ेद ही होता है। छिलके का क्या! वह तो कच्चे केले में हरे रंग का होता है।" मैंने फिर बच्चों से पूछा, "अच्छा बताओ, दादी चश्मा क्यों लगाती हैं?" अधिकांश बच्चों ने कहा, "उन्हें दिखाई नहीं

देता इसलिए।" पर एक बालक रामजीलाल ने कहा, "नहीं, मेरी दादी तो पढ़ने के लिए चश्मा लगाती हैं। वैसे तो उन्हें ख़ूब दिखता है।" बच्चों से चित्रों पर चर्चा के बाद उन चित्रों के नाम लिखकर बच्चों से वर्ण / अक्षर की पहचान करवाने का काम किया। चूँकि बच्चे चित्र का नाम पहले से ही जानते थे, इसलिए उनको लिपि संकेत पहचानने में मदद मिली। इस तरह कार्य करने से बच्चों को अक्षरों की पहचान करने में कम समय लगा, ऐसा मुझे महसूस हुआ।

मैंने ऊपर लिखा भी है कि जब मैंने वर्णों पर सीधे ही शुरुआत की थी, तब बच्चे नहीं समझ पा रहे थे। चित्रों के बाद मैंने बच्चों से उनके परिवेश में उन्होंने जो चीज़ें देखी हैं, उनके नाम एक-एक करके बताने को कहा। बच्चे बहुत-सी चीज़ों के नाम जानते थे। उन्होंने अपनी भाषा में इनके नाम बताए। मसलन, कांदा (प्याज़), भाटा (पत्थर), उंदरा (चूहा), छाछ, दूध, गाय, मग्गा (जग), जेवड़ी (रस्सी), खाहली (मटकी), गुड़, शक्कर, चीनी, क़ब्ज़ा, घाघरा, लुगड़ी (ओढ़नी), गिलास, गाड़ी, कूँची (चाबी), ताला, नल, पानी, बरखा (बरसात), आदि। इन सभी नामों को मैं ब्लैकबोर्ड पर लिखता गया। सारे नाम लिखने के बाद बच्चों से पढ़वाया तो मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि एक-दो बच्चों को छोड़कर सभी ने ठीक-ठाक पढ़ लिया, जबकि अभी ये वर्णमाला के सारे अक्षरों / मात्राओं से परिचित नहीं थे। मैंने शब्दों का क्रम बदलकर एक बार और पढ़ने के लिए कहा। अबकी बार कुछ बच्चे ही पढ़ पाए।

मैंने समझ लिया कि लिपि चिह्नों की पहचान पर थोड़ा और काम करना मददगार होगा। इसलिए मैंने इन परिचित शब्दों से ही अक्षर व मात्राओं की पहचान करवाना शुरू किया। समान ध्वनि वाले परिचित शब्द जैसे– चाचा, मामा, दादा, पापा, काकी, नानी, दादी, अन्तिम अक्षर समान ध्वनि वाले जैसे– चल, कल, पल, हल, सर, पर, कर, मर, तब, अब, कब, आदि का मौखिक व लिखित अभ्यास भी बच्चों को ख़ूब करवाया। इसी क्रम में मैंने बच्चों से तुक वाले शब्द बनवाए। मसलन– ताली, जाली, वाली, नाली, ख़ाली, साली, बाली, गाली, आदि। बच्चों के साथ जो कविताएँ की थीं उनमें आए तुकबन्दी वाले शब्दों को भी बच्चों ने पहचाना और लिखा। बच्चों को शब्दों की लड़ी का खेल भी खिलवाया। जैसे– जलेबी, बीज, जग, गमला, लाल, लड़का, काला, लात, तगारी आदि। इस खेल में शब्दों के अन्तिम अक्षर से शुरू होने वाला नया शब्द बच्चे सोचकर बताते हैं, कभी-कभी मैं भी उनकी मदद करता हूँ। इस खेल में बच्चों को बहुत आनन्द आता है और मुझे भी सोचने-समझने के अवसर मिलते हैं। इन सब शैक्षणिक गतिविधियों से बच्चे बड़ी सहजता के साथ सीख रहे हैं। इन सब कार्यों के बाद मैंने चित्रों पर बच्चों से छोटे-छोटे वाक्य लिखवाना





शुरू किया। बच्चों ने शुरुआत में दो-दो शब्दों के छोटे-छोटे एक-दो वाक्य ही लिखे, पर बाद में वे तीन-चार शब्दों के वाक्य भी लिखने लगे। मसलन– आम खा, राम इधर आ, यह मेरा घर है, गाय चारा खाती है, आदि।

इस तरह के लिखित अभ्यास करवाते समय मैंने बच्चों की अशुद्धियों पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि अभी मेरा उद्‌देश्य बच्चों में केवल लिखने-पढ़ने में रुचि पैदा करना ही था। बच्चे अपने मन से लिखने लगें और मन के विचार कहने लगें, यही मेरा मुख्य उद्‌देश्य था। इसलिए मैंने बच्चों की ग़लतियों को नज़रअन्दाज़ किया। इस पद्धति से बच्चे बहुत कम समय में आनन्द के साथ पढ़ना-लिखना सीख रहे हैं और इन तरीक़ों में मेरा विश्वास भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है।

हंसराज तंवर महात्मा गाँधी राजकीय विद्यालय बनेठा, ब्लॉक उनियारा, ज़िला टोंक, राजस्थान में अध्यापक हैं। तीन दशकों से अध्यापन का कार्य कर रहे हैं। शिक्षा में नवाचारों के पक्षधर हैं। डाइट के साथ जुड़कर विगत तीन वर्षों से राज्य एवं ज़िला स्तरीय क्रियात्मक शोध का कार्य रहे हैं। तात्कालिक मुद्दों, सामाजिक कुरीतियों पर आलेख व कविताएँ लिखते रहते हैं। इनकी दो किताबें *मन की हूँक* व *गुरुज्ञान* प्रकाशित हो चुकी हैं।

सम्पर्क : hansrajtanwar56@gmail.com